गाये जा गीत मिलन के, तू अपनी लगन के . . .

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

सामान्य तौर पर हम लोग फ़िल्मी गीतों को साहित्य की श्रेणी में नहीं रखते हैं. परन्तु ये भी सच है कि हमारी पुरानी फिल्मों के अधिकतर गीत स्तरीय साहित्य की ऊँचाई को स्पर्श करते हैं और उनको लिखने वाले गीतकार यक़ीनन अच्छे साहित्यकारों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं.

शकील अहमद इसी स्तर के उर्दू के प्रसिद्ध शायर और हिंदी फ़िल्मों के एक महान गीतकार थे जो बदायूं से होने की वजह से शकील बदायूंनी कहलाये .वे अपने गीतों की सरल भाषा, गहरे भावों और शास्त्रीय सौंदर्य के लिये जाने जाते थे . प्यार, मिलन, दर्द, विरह, भक्ति, और मानवीय संवेदनाओं को उन्होंने जिस सच्चाई और माधुर्य से शब्दों में ढाला वो उन्हें अलग पहचान देता है.

वर्ष 1946 में उन्हें दिल्ली के एक मुशायरे में शिरकत करने का मौका मिला. उन्होंने शेर पढ़ा था- 'मैं नजर से पी रहा था तो दिल ने बद्दुआ दी, तेरा हाथ जिंदगी भर कभी जाम तक न पहुंचे ', मुशायरे में मौजूद प्रसिद्ध फिल्म निर्माता ए आर कारदार को यह शेर इतना पसंद आया कि उन्होंने शकील बदायूंनी को मुंबई आने का निमंत्रण दे दिया. वह बम्बई पहुंचे तो वहां महान संगीतकार नौशाद से उनकी मुलाकात हुई. नौशाद ने उन्हें फिल्म 'दर्द' (1947) के लिए गीत लिखने का मौका दिया और इस फ़िल्म के 'अफसाना लिख रही हूं दिले बेकरार का ', 'आज मची है धूम ', 'दिल धड़के आँख मेरी' जैसे सुपर हिट गानों के साथ वे फ़िल्मी दुनिया में मशहूर हो गए. इसके बाद तो इन दोनों की जोड़ी ने अगले 20 साल तक बॉलीवुड में धूम मचा दी. इस जोड़ी ने हिंदी सिनेमा को ऐसे यादगार गीत दिए जो आज भी उतने ही ताज़ा और प्रभावशाली हैं, शकील बदायूंनी व नौशाद की बेमिसाल जोड़ी ने हिंदी सिनेमा में भावनात्मक और शास्त्रीय रागों पर आधारित गीतों की परंपरा को एक नया मुकाम दिया. 'मुग़ल ए आज़म ', 'दीदार ', 'बैजू बावरा ', 'मदर इंडिया' 'मुग़ल-ए-आज़म',, 'गंगा जमुना ', 'मेला ', 'दुलारी ', 'आन ', 'उड़न खटोला ', 'कोहिनूर' 'मेरे महबूब ', 'सन ऑफ़ इंडिया' 'राम और श्याम ', जैसी फ़िल्मों के यादगार गीत इसी बेमिसाल साझेदारी की अद्भुत देन हैं .

इसी प्रकार शकील बदायूंनी ने संगीतकार हेमंत कुमार के साथ 'साहिब बीबी और गुलाम ', 'बीस साल बाद ', और संगीतकार रवि के साथ 'चौदहवीं का चांद ', 'दो बदन ', 'घराना' ', 'फूल और पत्थर' 'नर्तकी ', जैसी सुपर हिट फिल्मों के लिये गीत लिखे . 'साहिब बीवी और गुलाम' के गीत 'न जाओ सैंया छुड़ा के बइयाँ', 'भंवरा बड़ा नादान' और फ़िल्म 'चौदहवीं का चांद' के गीत, चौदहवीं का चांद हो या आफताब हो ', 'मिली खाक में मुहब्बत ', 'शरमा के ये क्यूँ सब पर्दानशीँ ', आदि आज भी अत्यंत लोकप्रिय हैं व फ़िल्मी गानों के रसिकों द्वारा खूब गुनगुनाए जाते हैं. इनके अलावा उन्होंने सी रामचंद्र, एस डी बर्मन, रोशन आदि महान संगीतकारों के साथ भी काम किया. शकील बदायूंनी ने एक तरफ मुहब्बत और

दर्द भरे गीतों से अपना खास पहचान बनाई साथ साथ भक्ति भाव से भरे भजन लिखकर अनूठी मिसाल पेश की. मोहम्मद रफी की आवाज से सजा फिल्म 'बैजू बावरा' का 'राग मालकौन्स' में बंधा यह अमर गीत 'मन तड़पत हरि दर्शन को आज' क्लासिक का दर्जा रखता है और आज भी लोगों की जुबान पर है .

दरअसल फिल्म 'बैजू बावरा' के निर्देशक विनय भट्ट इस फिल्म के गीत कवि प्रदीप से लिखवाना चाहते थे. नौशाद ने विनय भट्ट से कहा एक बार शकील के गीत देख लें. निर्देशक सोच रहे थे कि भला एक शायर कैसे भजन लिखेगा ? मगर जब उन्होंने शकील के गीतों को सुना तो वह उनके मुरीद हो गए और इस फ़िल्म के सारे गीत शकील की कलम से निकले. वर्ष 1953 की इस कालजयी फ़िल्म के कुछ और गीत देखिए, 'दूर कोई गाए धुन ये सुनाये ', 'मोहे भूल गए सांवरिया ', 'झूले में पवन के आई बहार ', 'बचपन की मुहब्बत को दिल से ', 'ओ दुनिया के रखवाले ', 'तू गंगा की मौज ', 'तेरे बिन छलिया रे बाज़े ना मुरलीया रे 'आदि, इस फ़िल्म का हर गीत लाजवाब है . इन गीतों में भाषा की सरलता के साथ भावों की गहराई स्पष्ट दिखाई देती है. वे कठिन उर्दू लफ़्ज़ों से परहेज करते हुए आम श्रोता के दिल तक पहुँचने वाली सरल भाषा का प्रयोग करते थे. उनकी पंक्तियाँ सीधे मन को छूती हैं और लंबे समय तक स्मृति में बनी रहती हैं. उनके गानों में सादगी और गहराई दोनों थी जो उन्हें एक महान गीतकार बनाती हैं .

शकील बदायूंनी ने 100 से अधिक फिल्मों के लिये अनेकों सदाबहार गीत लिखे, उनके लिखे गीतों में रूमानियत और शायरी का सुन्दर मिश्रण होता था, जो उन्हें हिंदी फिल्मों का एक कालजयी गीतकार बनाता है. उन्होंने ज़िन्दगी के हर रंग को अपनी लेखनी से गीतों में बहुत खूबसूरती से उभारा, उनके प्रसिद्ध गीतों में 'प्यार किया तो डरना क्या '(मुग़ले आज़म), 'तू गंगा की मौज '(बैजू बावरा), 'मधुबन में राधिका नाचे रे '(कोहिनूर), 'इंसाफ़ का मंदिर है ये '(अमर), 'सुहानी रात ढल चुकी' (दुलारी), 'गाये जा गीत मिलन के' (मेला), 'ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साथ ले ले '(उड़न खटोला), 'नसीब दर पे तेरे आज़माने आया हूं' (दीदार), 'अगर ये दुनिया चमन होती तो वीराने कहाँ जाते' (अमर) , 'दो हंसो का जोड़ा बिछड़ गया रे '(गंगा जमुना) , 'दूर क़ोई गाये धुन ये सुनाये '(बैजू बावरा), 'धरती को आकाश पुकारे '(मेला), 'ये ज़िन्दगीके मेले '(मेला), 'मेरे महबूब तुझे मेरी मुहब्बत की कसम '(मेरे महबूब), 'इंसाफ की डगर पे' (गंगा जमुना, 'रहा गर्दिशों में हरदम '(दो बदन), 'भरी दुनिया में आखिर दिल को समझाने कहाँ जाएँ '(दो बदन), 'मुझे इश्क़ है तुझी से '(उम्मीद), 'आज की रात मेरे दिल की सलामी '(राम और श्याम), 'मेरा यार बना है दूल्हा ', 'मिली खाक में मुहब्बत' (चौदहवीं का चांद) आदि गीत शामिल हैं. शकील बदायूंनी को लगातार तीन वर्ष, फिल्म फेयर अवार्ड मिला. ऐसा हिंदी फिल्मों के इतिहास में पहली बार हुआ, पहला पुरस्कार उन्हें वर्ष 1961 में 'चौदहवीं का चांद' फिल्म के प्रसिद्ध गाने 'चौदहवीं का चांद हो या आफताब हो' के लिए दिया गया. दूसरी बार 1962 में 'घराना' फिल्म के सुपरहिट गीत 'हुस्न वाले तेरा जवाब नहीं' के लिए यह अवार्ड मिला, जबकि 1963 में फिल्म 'बीस साल बाद' के गीत 'कहीं दीप जले कहीं दिल' के लिए इन्हें इस पुरस्कार से नवाजा गया .

उनके लिखे गीत आज भी भारतीय फ़िल्मी संगीत की अमूल्य धरोहर बने हुए हैं. आज भी जब उनके लिखे गीत बजते हैं, तो श्रोता भावनाओं के उसी संसार में पहुँच जाते हैं जिसे शकील बदायूंनी ने अपनी कलम से रचा था, शकील बदायूँनी केवल एक गीतकार नहीं, बल्कि भावनाओं के सच्चे शायर थे. उनके लिखे गीतों में रूमानियत और शायरी का सुन्दर मिश्रण होता था जो उन्हें हिंदी सिनेमा का एक कालजयी गीतकार बनाता है.उन्होंने हिंदी फिल्मों को ऐसी काव्यात्मक ऊँचाई दी, जहाँ शब्द संगीत बन जाते हैं और संगीत आत्मा से संवाद करता है. हिंदी फ़िल्मी दुनिया में उनका योगदान हमेशा स्मरणीय रहेगा .

आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मिलेंगे, तब तक महान गीतकार शकील बदायूँनी के अमर गीतों का आनंद लीजिये और उनके जादू में खो जाइये .

उर्वशी रौतेला की तस्वीरों ने पुरानी यादें दिलाईं

उर्वशी रौतेला ने अपनी हालिया तस्वीरों से सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है. उर्वशी रौतेला एक बार फिर चर्चा के केंद्र में हैं. ग्लोबल सुपरस्टार और दुनिया भर में 200 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स वाली इस अभिनेत्री ने अपनी हालिया तस्वीरों से सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है. अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता और व्यस्त पेशेवर जीवन के बावजूद, उर्वशी अपने परिवार और भावनात्मक जुड़ाव को प्राथमिकता देती हैं,यही बात उन्हें दुनियाभर के प्रशंसकों के और करीब लाती है.

हालांकि इस बार चर्चा सिर्फ ग्लैमर या रेड-कार्पेट फैशन की नहीं है. उर्वशी की हालिया तस्वीरों ने फैंस को मंत्रमुग्ध कर दिया, क्योंकि उनमें उन्हें हिंदी सिनेमा की सदाबहार और दिग्गज अदाकारा मधुबाला से तुलना की जा रही है, जिन्हें भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे खूबसूरत अभिनेत्रियों में गिना जाता है.

वायरल तस्वीरों में उर्वशी क्लासिक और विंटेज-प्रेरित अंदाज़ में नजर आ रही हैं. चेहरे को फ्रेम करती मुलायम घुंघराले बाल, काजल से सजी अभिव्यक्तिपूर्ण आँखें और सादगी भरी शालीनता, जो बॉलीवुड के स्वर्णिम युग की याद दिलाती है. कुछ ही घंटों में कमेंट सेक्शन 'मॉडर्न-डे मधुबाला' जैसे प्रशंसात्मक संदेशों से भर गया और फैंस ने उनकी अलौकिक खूबसूरती की जमकर तारीफ की.

कई प्रशंसकों का मानना है कि यह समानता केवल बाहरी रूप तक सीमित नहीं है. तस्वीरों में उर्वशी की सूक्ष्म भाव-भंगिमाएं और गरिमामयी अंदाज़ ने लोगों को मधुबाला की याद दिला दी, जो मुग़ल ए आजम जैसी क्लासिक फिल्मों में अपने यादगार अभिनय के लिए जानी जाती हैं. इस तुलना ने पुरानी यादों की एक लहर पैदा कर दी है, जब परदे पर सुंदरता की पहचान सादगी, मासूमियत और आकर्षक स्क्रीन प्रेज़ेंस से होती थी.

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उर्वशी और मधुबाला की तस्वीरों के कोलाज भी साझा किए जा रहे हैं, जहाँ प्रशंसक उनकी मुस्कान और चेहरे की समानताओं को रेखांकित कर रहे हैं.

अक्षय कुमार ने भूत बंगला के सेट को बनाया क्रिकेट मैदान

हाल ही में 'भूत बंगला' का सेट एक मिनी क्रिकेट ग्राउंड में बदल गया, जहां अक्षय कुमार, शिखर धवन के साथ क्रिकेट खेलते नजर आए. 14 साल के लंबे इंतजार के बाद, बॉलीवुड की मशहूर एक्टर-डायरेक्टर जोड़ी अक्षय कुमार और प्रियदर्शन 'भूत बंगला' के लिए फिर से साथ आ रहे हैं, और इस खबर ने फैन्स के बीच जबरदस्त एक्साइटमेंट पैदा कर दी है. ये दोनों हिंदी सिनेमा को कुछ सबसे पसंदीदा कॉमेडी फिल्में देने के लिए जाने जाते हैं. इस बार, वे एक हॉरर-कॉमेडी के साथ वापसी कर रहे हैं जो डर और हंसी दोनों का वादा करती है. बालाजी मोशन पिक्चर्स के बैनर तले बन रही इस फिल्म से उनके सिग्नेचर ह्यूमर, परफेक्ट कॉमिक टाइमिंग और उस क्लीन फैमिली एंटरटेनमेंट के वापस आने की उम्मीद है जिसने उनकी पिछली फिल्मों को इतना पॉपुलर बनाया था.

हाल ही में 'भूत बंगला' का सेट एक मिनी क्रिकेट ग्राउंड में बदल गया जब अक्षय कुमार अपनी वही संक्रामक एनर्जी कैमरे के पीछे भी ले आए. पर्दे के पीछे के एक मजेदार वीडियो में, सुपरस्टार किसी और के साथ नहीं बल्कि शिखर धवन के साथ क्रिकेट खेलते नजर आए, जिसे देख क्रू मेंबर्स ऐसे चीयर करने लगे जैसे कोई स्टेडियम मैच चल रहा हो. जो एक कैजुअल गेम के तौर पर शुरू हुआ था, वो देखते ही देखते सेट पर एक फुल-ऑन क्रिकेट फीवर में बदल गया, जहाँ शॉट्स के बीच हंसी-मजाक और टीम स्पिरिट छाई रही.

मजा तब और बढ़ गया जब अक्षय ने पूरे क्रू को एक ओपन चैलेंज दे दिया और जीतने वाली टीम के लिए नकद इनाम का ऐलान भी कर दिया. इस दोस्ताना मुकाबले ने सेट पर एक अलग ही रोमांच और भाईचारा भर दिया, जिससे यह साफ हो गया कि फिल्म के डर और पागलपन के अलावा, सेट पर टीम वर्क और मस्ती का राज था.

मेकर्स ने हाल ही में फिल्म का पहला गाना 'राम जी आके भला करेंगे' रिलीज किया है, और रिलीज के बाद से ही इसने इंटरनेट पर तहलका मचा दिया है. यह गाना फिलहाल सभी प्लेटफॉर्म पर ट्रेंड कर रहा है और फैन्स को इसका वाइब्रेंट अंदाज बहुत पसंद आ रहा है. अक्षय कुमार की वही जबरदस्त एनर्जी, सटीक कॉमिक टाइमिंग और शानदार डांस मूव्स ने पुरानी यादें ताजा कर दी हैं, जो दर्शकों को उनकी क्लासिक फिल्मों की याद दिलाती हैं.

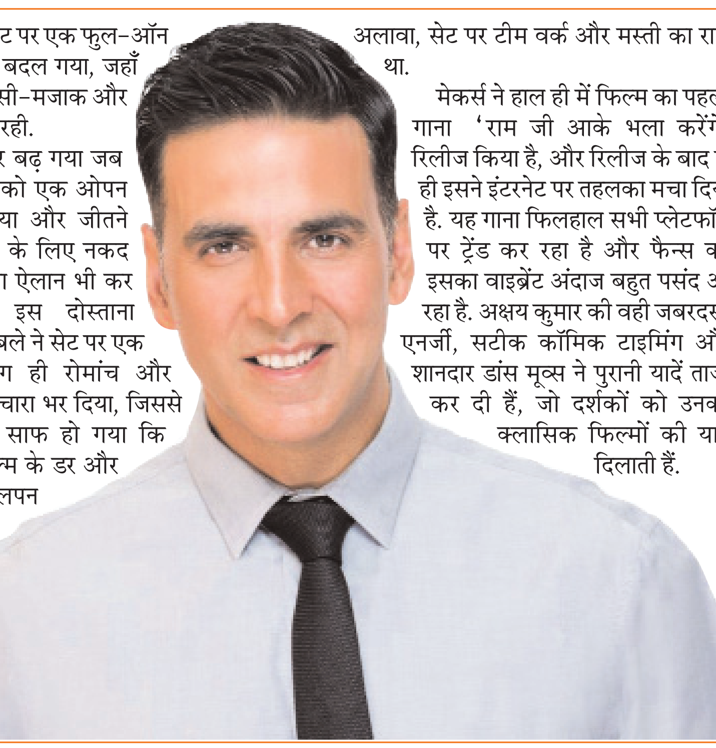

रोज सरदाना अपनी अगली शूटिंग के लिए नाशिक रवाना

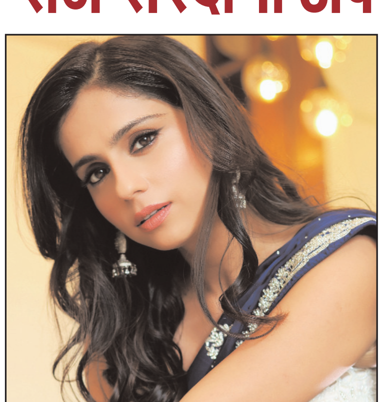

बहुचर्चित फ्रेंचाइज़ी भूल भुलैया 3 से जुड़ने के बाद अभिनेत्री रोज़ सरदाना अब अपने अगले रोमांचक प्रोजेक्ट की ओर बढ़ चुकी हैं. प्रतिभाशाली अभिनेत्री रोज़ सरदाना इन दिनों नासिक की खूबसूरत वादियों में जेसी लीवर के साथ शूटिंग कर रही हैं, और यह नई जोड़ी पहले ही दर्शकों के बीच उत्सुकता जगा चुकी है.

अपने भावपूर्ण अभिनय और सहज आकर्षण के लिए जानी जाने वाली रोज़ इंडस्ट्री में लगातार अपनी अलग पहचान बना रही हैं. नासिक का यह शेड्यूल प्रोजेक्ट का एक अहम हिस्सा बताया जा रहा है, जहाँ शहर की मनमोहक पृष्ठभूमि में कई महत्वपूर्ण दृश्यों की शूटिंग की जा रही है. हालांकि कहानी से जुड़ी जानकारी फिलहाल गुप्त रखी गई है, लेकिन सूत्रों के अनुसार रोज़ इस प्रोजेक्ट में एक जीवंत और ऊर्जावान किरदार निभाती नजर आएंगी, जो उनके अभिनय के एक नए रंग को दर्शकों के सामने लाएगा. अपने अनुभव के बारे में बात करते हुए रोज़ ने कहा, 'हर प्रोजेक्ट आपको कुछ नया सिखाता है, और यह प्रोजेक्ट मेरे लिए बहुत खास है. नासिक में शूटिंग करना बेहद खूबसूरत अनुभव रहा है. इस जगह की ऊर्जा सचमुच पर्दे पर दिखाई देती है. जेसी के साथ काम करना बहुत मज़ेदार रहा; हमारे दृश्यों में एक स्वाभाविक तालमेल है.

काशिका कपूर ने पर जानवरों के प्रति दया दिखाने का आग्रह

अभिनेत्री काशिका कपूर ने लोगों से होली पर जानवरों के प्रति दया दिखाने का आग्रह किया है. जानवरों के प्रति अपने प्रेम और उनके कल्याण के लिए लगातार आवाज उठाने के लिए जानी जाने वाली काशिका ने इस होली एक मजबूत रुख अपनाया है. उन्होंने लोगों से अपील की है कि वे जानवरों पर रंग न लगाएँ. उनका कहना है कि जहाँ होली खुशी और एकता का प्रतीक है, वहीं आवारा कुत्ते, बिल्लियाँ, पक्षी अन्य जानवर इस दौरान चुपचाप तकलीफ झेलते हैं.

हाल ही में एक बातचीत में काशिका ने कहा, 'होली खुशियाँ बांटने का त्योहार है. लेकिन जानवरों के लिए यह डर और असुविधा का दिन बन सकता है. रंगों में मौजूद केमिकल उनकी त्वचा, आँखों और फर को नुकसान पहुँचा सकते हैं. तेज आवाज़ और अफरा-तफरी भी उन्हें तनाव में डाल देती है. आइए, जिम्मेदारी से जश्न मनाएँ और उन्हें सुरक्षित रखें. '

महिला दिवस पर अभिनेत्रियाँ बता रही हैं कि उनके लिए सशक्तिकरण का क्या अर्थ है

प्रियंका चाहर चौधरी, जो कलर्स के सुपरनैचुरल शो नागिन में अनंता का किरदार निभा रही हैं, कहती हैं मैं चार बहनों वाले परिवार में पली-बड़ी हूँ, इसलिए मजबूती हमारे जीवन का स्वाभाविक तरीका था. हमें हमेशा यह सिखाया गया कि स्वतंत्र होना कोई विकल्प नहीं, बल्कि ज़रूरी है. मेरे पिता हमेशा कहते थे अगर तुम दुनिया में कदम नहीं रखोगी, तो सीखोगी कैसे? मैंने देखा है कि महिलाओं पर लगाए गए कई प्रतिबंध उनकी क्षमता से नहीं, बल्कि सोच और परवरिश से आते हैं. मुझे यह अवसर मिलने का सौभाग्य है कि मैं नागिन में सर्प रानी अनंता का रूप लेकर शक्ति का प्रदर्शन कर सकूँ. हमारी संस्कृति में हम अक्सर देवी शक्ति और महादेव की बात करते हैं, और मुझे लगता है कि यह प्रतीकवाद यूँ ही नहीं है. शक्ति और सौम्यता साथ-साथ रह सकती हैं. मेरी इच्छा है कि और महिलाएँ अपनी सुपरपावर पहचानें चाहे वह कोई हुनर हो, कोई कला हो या कोई जन्मजात गुण. हर महिला को महिला दिवस की शुभकामनाएँ, जो अपनी प्रखर और कोमल दोनों ही पक्षों को अपनाती है. मानसी साल्वी, जो कलर्स के शो महादेव एंड सन्स में भानु का किरदार निभा रही हैं, कहती हैं मुझे अच्छा लगता है कि महिला दिवस लोगों को रुककर यह सोचने पर मजबूर करता है कि महिलाएँ रोज़ाना किन परिस्थितियों से गुज़रती हैं. लेकिन यह ठहराव सिर्फ एक दिन का नहीं होना चाहिए, बल्कि पूरे साल हमारी सोच बदलनी चाहिए. आज मुझे सबसे ज्यादा उत्साहित करता है यह देखना कि महिलाएँ कितनी मजबूती से एक-दूसरे के लिए खड़ी हो रही हैं. उस बहनापे में एक शांत शक्ति है सीमाएँ तय करने में, ना कहने में और उसके लिए माफी न माँगने में. भानु भी ऐसी ही महिला है. वह अपने विश्वासों पर अडिग रहती है, चाहे हालात कितने भी उलझे क्यों न हों. शो का नाम भले ही महादेव एंड सन्स है, लेकिन असल में कहानी को आगे बढ़ाने वाली और अपनी शक्ति गढ़ने वाली महिलाएँ ही हैं. इस महिला दिवस पर मेरी आशा है कि और महिलाएँ अपनी आवाज़ पर भरोसा करें, जगह बनाएँ और खुद पर शक करना बंद करें.

जी टीवी की नई कैम्पेन फिल्म पिच पिचक पिच ने दिया साफ और सेफ होली का संदेश

होली साल में एक बार आती है, लेकिन कई शहरों में इसका असर पूरे साल महसूस होता है. वजह रंगों की खुशियां नहीं, बल्कि वो आदतें हैं जो सार्वजनिक जगहों को गंदा और बदसूरत बना देती है. सड़कें, दीवारें, बस स्टॉप, बगीचे और मेट्रो स्टेशन कई बार गुलाल के रंगों से नहीं, बल्कि पान और गुटखे की पीक के दागों से भर जाते हैं. ऐसे शहर खुशियों से ज्यादा गंदगी का एहसास कराने लगते हैं. होली का असली मतलब रंग, खुशी और साथ मिलकर जश्न मनाना है, लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है जो अब आम होता जा रहा है. कई लोग अपनी अस्वच्छ आदतों से शहर की जगहों को सालभर खराब करते रहते हैं. बेबस जानवरों पर रंग डालकर होली खेलना बेहद क्रूर है और इससे जरूर बचना चाहिए. बहुत तेज म्यूजिक और शोरगुल वाले डीजे से पूरे मोहल्ले का माहौल बिगड़ जाता है. जिससे बुजुर्गों, बीमार लोगों और उन लोगों को परेशानी होती है जो इस शोरगुल का हिस्सा नहीं बनना चाहते. राह चलते लोगों पर पानी के गुब्बारे फेंकना भी कई बार चोट और असुविधा का कारण बन जाता है.

संदीपा धर ने 'चुंबक' की शूटिंग पूरी की

अभिनेत्री संदीपा धर ने अपनी आगामी ओटीटी सीरीज़ 'चुंबक' की शूटिंग पूरी कर ली है. संदीपा ने इस बात की जानकारी अपने इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए फैंस के साथ साझा की है. साथ ही पोस्ट के माध्यम से इस प्रोजेक्ट की शूटिंग खत्म होने की खुशी जाहिर करते हुए उन्होंने टीम के साथ अपने अनुभव को भावुक और संतोषजनक बताया. हालांकि उन्होंने 'चुंबक' की कहानी या अपने किरदार के बारे में ज्यादा खुलासा नहीं किया है, लेकिन उनके संदेश से यह साफ है कि यह प्रोजेक्ट उनके लिए बेहद खास है.

गौरतलब है कि 'चुंबक' सीरीज़ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज होने वाली है और माना जा रहा है कि इसमें संदीपा एक नए और दमदार अंदाज में नजर आएंगी. फिलहाल इस सीरीज़ की रिलीज डेट और कहानी से जुड़ी विस्तृत जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन शूटिंग पूरी होने के साथ ही यह प्रोजेक्ट अब पोस्ट-प्रोडक्शन की ओर बढ़ चुका है.

अब तक फिल्मों और वेब सीरीज़ में अपने विविध और प्रभावशाली अभिनय से एक अलग पहचान बनानेवाली संदीपा धर, अपनी सीरीज़ 'चुंबक' को लेकर जितनी उत्साहित हैं, उनके दर्शक उससे भी ज़्यादा उत्सुक हैं, उसे देखने के लिए. उनके फैंस को उम्मीद है कि यह सीरीज़ संदीपा धर के करियर का अगला बड़ा ओटीटी मोमेंट साबित हो सकती है.

आयशा खान का शॉकिंग खुलासा

एक्ट्रेस आयशा खान ने हाल ही में बताया कि सोशल मीडिया पर अक्सर उन्हें बॉडी को लेकर सेक्शुअल कमेंट्स मिलते हैं और लगभग हर दिन उन्हें रेप की धमकियां भी दी जाती हैं.

आयशा ने बताया कि पब्लिक लाइफ में होने और एक महिला सेलिब्रिटी होने के कारण रोजाना किस हद तक यौन उत्पीड़न से लेकर यौन हिंसा की धमकियों से जूझना पड़ता है. एक्ट्रेस ने कहा कि कई बार ट्रोलर्स अपनी हदें पार कर देते हैं और हस्तियों की पोस्ट पर अश्लील कमेंट्स लिख देते हैं. आयशा हाल ही 'किस किसको प्यार करूं 2' और 'धुरंधर' के गाने 'शरारत' में नजर आई थीं.

मोजो स्टोरी को दिए इंटरव्यू में आयशा ने कहा- 'इंस्टाग्राम पर लगभग हर दिन मेरी बॉडी को सेक्शुएलाइज किया जाता है. मैं एक नॉर्मल टॉप भी पहन लूं तो लोगों को दिक्कत होती है. मैं स्कर्ट पहनती हूं, तो भी दिक्कत होती है. मुझे कुछ भी पोस्ट करने से पहले सोचना पड़ता है. अगर मुझे कुछ पहनने या पोस्ट करने से पहले सोचना पड़े, सिर्फ इसलिए कि कोई और मुझे सेक्शुएलाइज करेगा, तो यह वाकई बहुत दुखद स्थिति है.'